अनुसुइया जी की कथा PDF

एक बार महर्षि नारद भगवान शंकर, विष्णु और ब्रह्मा से मिलने स्वर्ग गए। लेकिन वह तीनों में से किसी से नहीं मिल सके। तीनों की पत्नियां अपने-अपने लोक में अवश्य उपस्थित थीं। भेंट के समय महर्षि नारद ने अनुभव किया कि इन तीनों को अपने पतिव्रता धर्म, शील और गुणों पर बड़ा अभिमान है। इसलिए वे एक-दूसरे के पास गए और और उन्होंने कहा कि मैं कार्यक्रम के अनुसार पूरी दुनिया में यात्रा करता हूं परंतु आज तक मैंने अत्रि ऋषि की पत्नी के समान धर्म को पूर्ण पवित्रता से पालन करने वाली और संपूर्ण गुणों से संपन्न स्त्री न तो देखी और न ही सुनी। यह सुनकर पार्वती, लक्ष्मी और सावित्री बहुत ईर्ष्या करने लगीं।

अब वे तीनों व्यग्रता से अपने पति के आने की प्रतीक्षा करने लगीं। अपने-अपने स्वामी के आने पर, उन्होंने अपने पतियों से सती अनुसूया के विधर्म को तोड़ने की प्रार्थना की। पत्नियों के कहने पर तीनों देवता इसके लिए राजी हो गए। अब वे तीनों मिलकर इस प्रयोजन के लिए अत्रि ऋषि के आश्रम पहुंचे। वे तीनों पूरी योजना बनाकर भिखारी के रूप में भीख मांगने गए।

जब अनुसूया भिक्षा देने आईं तो अतिथि की सेवा के लिए तैयार अनुसूया ने कहा, "आप लोग गंगा में स्नान करके आओ, तब तक मैं भोजन बनाऊँगी। स्नान के बाद अनुसूया ने उन्हें भोजन कराया। तब तीनों देवों ने कहा कि जब तक तुम नग्न होकर भोजन नहीं करोगे तब तक हम भोजन नहीं करेंगे।

pdfinbox.com

अब पतिव्रत धर्म का पालन करने के कारण उसे देवताओं के कपट का पता चला। तब वह तीनों को बिठाकर अपने पति अत्रि ऋषि के पास गई और उनके चरण धोए और जल ले आई। उन्होंने उस जल को देवताओं पर छिड़का। जल के प्रभाव से तीनों देवता बच्चों के साथ दूध की तरह खेलने लगे। तब अनुसूया ने उन्हें दूध पिलाकर पालने में सुला दिया। इस प्रकार बहुत दिन बीत गए। जब तीनों देवता अपने निवास स्थान पर नहीं लौटे तो देवताओं और उनकी पत्नियों को चिंता हुई। फिर एक दिन उन्हें नारद जी से पता चला कि उन्हें अत्रि ऋषि के आश्रम के आसपास देखा गया है।

अब तीनों देव पलियां सती अनुसूया से उनके पति के बारे में पूछने लगीं तो अनुसूया ने पालने की ओर इशारा करते हुए कहा पहचानो। तीनों अपने पति को किसी प्रकार पहचान न सकीं अतः अनुसूयाजी हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगीं, “हे देवी! हमें हमारे पति अलग से दो। देवी अनुसूया ने कहा, "उसने मेरा दूध पी लिया है।" तो ये मेरे बच्चे हैं। अब उन्हें किसी न किसी रूप में मेरे साथ रहना है।

इस पर तीनों देवताओं के संयुक्त प्रयास से एक देवी तेज प्रकट हुईं जिनके तीन सिर और छह भुजाएं थीं। इस अलौकिक अवतार का नाम "दत्तात्रेय" रखा गया। अनुसूया ने फिर अपने पति के चरण धोए और देवताओं पर जल छिड़का, वे अपने पूर्व रूप में वापस आ गईं।

pdfinbox.com